"क्या आर्यसमाजी छोड़ रहे हैं आर्यसमाज?"

सुना भी है और बचपन से देखता, बरतता और करता भी आया हूँ, परन्तु क्या? यही आडम्बरों-पाखंडों-ढोंगियों-फंडियों के फंडों पर कटाक्ष और विरोध दोनों। परन्तु क्यों, क्योंकि बचपन से आर्यसमाजी होने का मतलब ही यह बताया दादा-दादी ने कि जहां भी ढोंग-पाखंड-आडम्बर देखो हल्ला बोलो, और अपनी स्वछंद व् तार्किक मति से संसार रुपी समुन्द्र में आर्यसमाजी विचारधारा रुपी नौका लेकर विहार करो|

परन्तु आज के हालात देख के तो ऐसा लगता है कि नवयुवाओं ने आर्यसमाज ही छोड़ दिया है| या जिन्होंने जिस उद्देश्य के लिए आर्यसमाज बनाया था वो उद्देश्य पूरा हो गया है और अब भीतरखाते इन युवानों को दूसरा उद्देश्य थमाया जा रहा है| क्या इतनी बड़ी कठपुतली भी हो सकते हैं यह नवयुवान? सम्भवत: आर्यसमाज की स्वछंद व् तार्किक मति वाली मूलधारा से जीना ही भुला चुके हैं? और अगर वास्तव में ऐसा है तो सावधान ओ योद्धेयों (योद्धाओं की नहीं योद्धेयों की, फर्क साफ़ समझा जाए यहां) की धरती के युवान आप आर्यसमाज छोड़ चुके हो| तो क्या मान-स्वाभिमान और अभिमान इतना सस्ता हो चला है कि आप आर्यसमाजी कहलाना बंद कर रहे हो?

सुना है आर्यसमाज को बचाने के लिए तो आप लोग कहीं पे करौंथा काण्ड कर देते हो तो कहीं 'इन्सां' वालों के खिलाफ मोर्चेबंदी? और एक तरफ आपकी ही विचारधाराओं से मिलती-जुलती 'पी के' और 'ओह माय गॉड' फ़िल्में क्या आई इनके विरुद्ध ही खड़े होने लगे? मैंने तो आर्यसमाजी पी. के. जैसी बातें करने वाले को गले लगाते देखे और आडम्बर-पाखंड करने वालों को खुलेआम जूते मारते देखे।

और मैं तो जिस गाँव से आता हूँ, वहाँ तो आज भी कोई साधू रैन-बसेरे रुक जाए तो असल तो आधी रात को ही पिट के जाए वर्ना सुबह तक तो पिटा-ही-पिटा समझो। जगरातियों और सतसंगियों पर तो आज भी मेरे गाँव में पत्थर बरसाने वाले लोग रहते हैं। इसलिए मेरे गाँव में कभी भी खुले गली-चौराहों-स्थानों पर जागरण और सतसंग नहीं होते। तो आर्यसमाजियों कौनसे रास्ते पर निकले जा रहे हो और आर्यसमाज को छोड़ के निकल भी रहे हो तो फिर सबसे पहले दो-चार जूते तो खुद आर्यसमाज को ही मार के जाओ क्योंकि 'पी. के.' और 'ओह माय गॉड' जैसी फिल्मों वाली शिक्षाएं दे के आर्यसमाज आपको 1875 से बहकाता आया है।

बचपन में आर्य कन्या गुरुकुल खरल, नरवाना-जींद के संस्थापक व् सौभाग्य से मेरे गाँव को अपनी जन्मस्थली होने का पुण्य प्रदान करने वाले श्रद्धेय स्वामी रत्नदेव सरस्वती जी के तत्वाधान में रामनिवास आर्यसमाजी और उनकी प्रचार मंडली आया करते थे हमारे गाँव में प्रचार करने। मैंने खुद उनके माइक लगाए हैं, उनके लिए खाट-कुर्सियां बिछाई हैं। तो वो पाण्डु-पिंडारा जींद के सोमवारी मोस (अमावस्या) पर वहाँ जाने वाली औरतों पे कटाक्ष करके हमें कुछ यूं जगाया करते थे कि मैंने एक ताई से

पूछा, ‘री ताई, तू इस बाबा की भभूत का के करैगी?’ तो ताई बोली, ‘ रे बेटा! बहु कै बाळक कोनी होते, बाबा जी ने इस भभूत को उसके सर में रगड़ने को कहा है।’ तो रामनिवास जी बोलते थे कि इस पर मैंने ताई को कहा कि ‘अरी ताई! बहु के बालों में रगड़ने के बाद हाथ धो लियो, वर्ना ऐसा ना हो कि तेरे सर में खुजली हुई और तूने उन्हीं भभूत के हाथों से सर खुजा दिया, और पता लगा कि नौ महीने बाद चाचा-भतीजा इकट्ठे पालने में झूल रहे हैं।’ वो एक किस्सा पिंडारा के तालाब का भी ऐसे करके सुनाते थे कि, ‘सुना है उस तालाब में नहाने से काले लोग भी गोरे हो जाते है, तो चुटकी लेते हुए यूं कहते थे कि, ‘यू पिंडारे वाला गामी झोटा रोज इस तालाब मह न्हावै सै और घंटों इसमें पड़ा रह सै, इस हिसाब से इसको तो आज तक मधुबाला से भी गोरा हो जाना चाहिए था। और श्रोता व् दर्शकगण खूब ठहाके लगा के हँसते थे।

खुद मेरी दादी घर में हम सबको आर्यसमाजियों की ऐसे ही पाखंडों की पोल खोलती हुई रिकॉर्डिंग्स सुना-सुना के बड़ा करके गई हैं, तो क्या उनकी सारी शिक्षाओं को इन मुट्ठीभर पता नहीं कौनसे-कौनसे 'वाद' का चोला ओढ़ उभर आये पाखंडियों की वजह से, आज कुँए में झोंक दूँ?

अरे! अब सबक लो कुछ| फिल्मों के वही कलाकार जो एक जमाने में अपनी फिल्मों में लड़कियों को कैसे छेड़ना है, समाज के रीतिरिवाज कैसे तोड़ने हैं के विषयों की फ़िल्में किया करते थे, वो आज खुद सत्यमेव जयते जैसे कार्यकर्मों में बैठ के दीपिका-परिणीति-कंगना को बुला कर समाज से अपनी ही फिल्मों में की हुई नादानियों पर घड़ियाली अफसोस भी जताने लगे हैं। सही भी है किसी ने ठीक ही कहा है जिस समाज के आडंबरी-पाखंडी कोतवाल और पहले फूहड़ता फैला के फिर सूहड़ता पे लेक्चर देने वाले कलाकार चौकीदार बन निकलें तो फिर उस समाज को गर्त में जाने से कोई नहीं रोक सकता।

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 26/12/14